

**प्रश्नः जीवनाचा अर्थ काय आहे?**

**उत्तरः** जीवनाला अर्थ काय आहे? मी जीवनातील उद्देशाना, पूर्णत्वाचा, तृपतीचा शोध घेतला का? मी काही महत्वाच्या सभाव्य गोष्टी साध्य करण्यासाठी शेवट प्रयत्न करून ती प्राप्त झाली का? पुष्कळ लोक महत्व पूर्ण प्रश्नाच्या उत्तराचे विचार करणे बंद करित नाहीत तर ते मागील गोष्टीकडे वळून पहातात्याबद्दल आश्वर्य करतात की त्यांचे संबंध का तुटले नाहीत किंवा. आपल्या मध्ये निराशा उत्पन्न करतात परंतु वास्तव्य हे आहे की,ज्या गोष्टी मिळविण्यासाठी ते निघाले होते ते त्यांना मिळाल्यात एका बेस बॉल खेडाळू जो प्रसिद्धीच्या उंच शिखरावर होता त्याला विचारण्यात आले की,जेव्हा सुरुवातीला तुम्ही खेळाला सुरुवात केली तेव्हा तुमची इच्छा काय होती त्यांने उत्तर दिले “माझी इच्छा होती की कोणी तरी मला सांगितले पाहिजे होते जेव्हा तुम्ही प्रस्तीधीच्या उंच शिखरावर जाल तेव्हा तीथे काहीच नाही.”काही उद्देश आमच्याजीवनातील रिकामे जागेला प्रगट करतात तेव्हा पुष्कळ वर्ष व्यर्थ वाया जातात. आमच्या मानावता वाढी संस्कृती मध्ये,पुष्कसे मनुष्य काही उद्देशांचा पाठलाग यासाठी करतात की त्यांना त्या विचाराच्या द्वारे काही जीवनाच्या उद्देशाचा अर्थ प्राप्त होईल्या मध्ये काही कार्य म्हणजे . व्यवसाया मध्ये यश, धनसंपती -,चागले नाते,लैंगीक संबंध,मनोरंजन,आणि दुसऱ्यासाठी चांगले करणे इत्यादी गोष्टी यामध्ये समाविष्ट आहेतमनुष्याने या सर्वचा उपयोग. त्याने धन – संपती,चांगले नातेसंबंध,आनंद, ह्याउद्देशना प्राप्त केले तेव्हा त्यांच्या लक्षात आले की,या मध्ये एक पुष्कळ खोलवर शुन्यता होती. रिकामीपणाचा एक अनुभव जसे की,कोणतीही वस्तु भरु शकत नाही. पवित्र शास्त्रामधील उपदेशकांच्या पुस्तकाचा लेखक अनुभवाने असे म्हणतो “व्यर्थ हो व्यर्थसर्व काही .... !व्यर्थ हो व्यर्थ ! व्यर्थ!”(उपदेशक-1:2)शलमोन राजाने या पुस्तकाचे लेखन केले,त्यांच्या जवळ अमाप धन संपती होती, तो पुष्कळ जानी होतात्यांच्याकाळात त्यांच्या सारखा. कोणी जानी नव्हता व आमच्या काळात नाहीत्याला शेकडो बायका . होत्या,त्याला पुष्कळ महाल व बगीचे होते, त्याचे राज्य सर्वानवर होते,उत्तम अन्न आणि मधीरा,आणि सर्वत्र त्याचे मनोरंजन करणारे उपलब्ध होते.“सुर्याखालील जीवनात” – याचा अनुभव फक्त तो घेऊ शकला आमच्या नेत्राने तसेच इंद्रियांनी त्याचा अनुभव त्यांने घेतला – ते सर्व व्यर्थ आहेतरी ! त्याला आपल्या जीवनात पोकळीकतेचा अनुभव घ्यावा लागलाही. पोकळीक का आहे.?कारण परमेश्वराने आमची रचना आज आणि आताच्या जगीक उद्देश घेण्या पेक्षा दुसऱ्या गोष्टीसाठी आमची रचना केली होतीशलमोनाने .

परमेश्वराशी म्हटले ,“त्यांने मनुष्याच्या मनात अनंतकाला विषयीची कल्पना उत्पन्न केली.....”(उपदेशक 3:11) आम्ही आपल्या अंतकरणात हे निश्चीत समजून घेणे गरजेचे आहे की,“आज – आणिआता -” जे आमच्या जवळ आहे ते सर्व काही नाही. उत्पती, पवित्र शास्त्रातील पहिल्या पुस्तकात आम्ही पाहतो, देवाने मनुष्याला त्याच्या प्रतीरूपा प्रमाणे बनविले उत्पती).1:26)याचा अर्थ असा की,आम्ही दुसऱ्यापेक्षा देवाच्या प्रतीरूपासारखे जास्त आहोतकोणत्याही).दुसऱ्याच्या जीवा पेक्षा( आम्ही आजून पाहतो की,मनुष्य पापात पडण्या आगोदर पृथ्वीवर शाप येण्या आगोदर खालील गोष्टी पृथ्वीवर होत्या आणि त्या खन्याआहेत ):1) देवाने मानवाला सामाजीक प्राणी बनविली उत्पती)2:18-25); (2) देवाणे माणसाला काम दिले;(3) देवाचे आणि मानवाचे नाते होते;(उत्पती 3:18);आणि)4)देवाने मानवाला संपूर्ण पृथ्वीवर अधिकार दिला;( उत्पती1:26). सर्व गोष्टीचे काय महत्व होते?या मधुन देवाला वाटत होते प्रत्येकाच्या जीवनात पुर्णता यावी विशेषता जो मनुष्य देवाच्या)संघती मध्ये आहेपरंतु( मनुष्य पापात पडल्या नंतर पृथ्वीवर शाप आला उत्पती)3). प्रगटीकरणा मध्ये,पवित्र शास्त्रातील शेवटचे पुस्तक देव त्यामध्ये प्रगट करीतो की वर्तमान युगातील पृथ्वी आणि आकाश जे आपण पाहत आहोत ते सर्व काहीनष केले जाणार आहेव त्या जागी एक नव .ीन पृथ्वी व नवीन अकाशाची रचना होणार आहेआणि त्यावेळी जे अयोग्य आहेत त्या सार्वाना अग्नी सर्वराच्या. कुंडामध्ये टाकण्यात येईल प्रगटी).20:11-15) त्या ठिकाणी शाप राहणार नाही आणि पाप,दुख आजार ;,मरण,व यातना राहणार नाहीत प्रगटी ) 21:4).आणि ह्यासर्व गोष्टीबद्दल विश्वासनाऱ्याना भयबित किंवा लाज वाटण्याचे कोणतेही कारण नाहीदेव त्याच्या संघती ते देवाचे . प्रगटी).पुत्र असणार आहेत21:7) अशा,प्रकारे आम्ही ह्या जीवन चकराला पूर्ण करीत आहोत देव आम्हाला त्यांच्यासंगती मध्ये ठेवण्यास तयार केले आहेपरंतु मनुष्याच्या पापामुळे. आम्ही त्यांच्या संगती मध्ये राहु शकत नाहीआमचे संबंध तुटले परंतु . देवाने पुन्हा एकदा मनुष्या संगती नाते जोडण्यासाठी प्रयत्न केलेपरंतु पुष्कळ . लोक देवासंगती सार्वकालीक जीवनात पासून वेगळे होण्यासाठी या जीवनाच्या प्रवासात काही पण आणि सर्व काही मरेपर्यंत जीवनाचा उद्देश पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करीत

आहेतदेवाने !व सार्वात वाईट गोष्ट आहे.परंतु हे व्यर्थ् आहे . फक्त सार्वकालीक जीवनाचा मार्ग तयार केला नाही लुक).23:43). परंतु पृथ्वीवर आमचे जीवन समृद्धीचे व अर्थ भरीत असावेसार्वकालीक आनंद आणि. "पृथ्वीवर स्वर्ग"कसा प्रात होऊ शकतो?

### प्रश्नदस आजाएँ क्या हैं? :

**उत्तर:** बाइबल में दस आजाएँ वे दस व्यवस्थाएँ हैं जिन्हें परमेश्वर ने इस्माएल के राष्ट्र को मिस्र से निर्गमन के ठीक कुछ समय के पश्चात् दी थी। दस आजाएँ आवश्यक रूप से उन 513 आजाएँ का सार है, जो कि पुराने नियम की व्यवस्था में वर्णित हैं। पहली चार आजाएँ परमेश्वर के साथ सम्बन्धों का निपटारा करती हैं। अन्तिम छआजाएँ हमारे एक दूसरे के साथ : सम्बन्धों का निपटारा करती हैं। दस आजाओं को बाइबल में निर्गमन 20:1-17 में और व्यवस्थाविवरण 5:6-21 में वर्णित किया गया है और वे ये हैं:

- 1) "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।ये आजा एक सच्चे "परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य की अराधना करने के विरुद्ध दी गई। बाकी के सभी देवता झूठे देवता हैं।
- 2) "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आजाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करूणा किया करता हूँ।यह आजा एक मूर्ति को "बनाने के विरुद्ध दी गई है, जो परमेश्वर का दृश्य प्रस्तुतीकरण होता है। ऐसी कोई भी मूर्ति जिसे हम रचते हैं वह परमेश्वर का सटीक प्रस्तुतीकरण नहीं है। किसी मूर्ति को बनाना एक झूठे देवता की अराधना करना है।
- 3) "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा।यह "आजा परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेने के विरुद्ध दी गई थी। हमें परमेश्वर के नाम को हल्का नहीं लेना चाहिए।हमें परमेश्वर के प्रति सत्कार केवल सम्मानजनक और श्रद्धा से भरे हुए तरीकों के द्वारा ही लेना चाहिए।
- 4) "तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छदिन तो तू : परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है। उस में न तो तू किसी भाँति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छदिन में : यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।शानिवार) यह वह आदेश है जिसमें सब्त को एक तरफ ", जो सप्ताह का अन्तिम दिन हैप्रभु को समर्पित विश्राम दिन के रूप में रख दिया गया है। (
- 5) "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए।यह आदेश सदैव "मातापिता के साथ सम्मान और सत्कार से व्यवहार करने के बारे में है।-
- 6) "तू खून न करना।यह आदेश किसी भी अन्य व्यक्ति को पहले से ही हत्या न करने के लिए मना करता है। "
- 7) "तू व्यभिचार न करना।यह जीवन साथी को छोड़कर किसी अन्य के साथ यौन सम्बन्ध बनाने के विरोध में दिया हुआ "आदेश है।
- 8) "तू चोरी न करना।यह आदेश किसी की कोई भी वस्तु को अपने लिए ", उसकी अनुमति लिए बिना, जो उससे सम्बन्धित को ले लेने के लिए मना करता है।
- 9) "तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।यह आजा किसी दूसरे के "विरुद्ध झूठी साक्षी देने के लिए मना करता है। यह झूठ बोलने के विरोध में एक आवश्यक आदेश है।
- 10) "तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दासदासी -, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।यह आदेश किसी ऐसी वस्तु की इच्छा करने के विरोध में दिया गया है जो "आपकी स्वयं की नहीं है। लालच करना ऊपर दिए हुए आजाओं की सूची में किसी भी एक को तोड़ सकता हैहत्या ;, व्यभिचार,

और चोरी। यदि ऐसा करना गलत है, तो किसी की कोई वस्तु का लालच करना भी गलत है।

कई लोग गलती से दस आजाओं को नियमों की एक सूची के रूप में देखते हैं, कि यदि इनका अनुसरण किया जाए, तो ये मृत्यु उपरान्त स्वर्ग में प्रवेश होने की गारंटी देते हैं। इसके विपरीत, दस आजाओं का उद्देश्य लोगों को यह अहसास करने के लिए मजबूत करना है कि वे पूर्ण रीति से व्यवस्था का पालन नहीं कर सकते हैं (रोमियों)7:7-11), और इसलिए उन्हें परमेश्वर की दया और अनुग्रह की आवश्यकता है। मती 19:16 में दिए हुए धनवान जवान के दावों के बावजूद, कोई भी दस आजाओं को पूरी तरह से पालन नहीं कर सकता है (सभोपदेशक)7:20)। दस आजाएँ प्रदर्शित करते हैं कि हम सबने पाप किया है (रोमियों)3:23) और इसलिए हमें परमेश्वर की दया और अनुग्रह की आवश्यकता है, जो कि केवल यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उपलब्ध है।

**प्रश्नअन्त समय अर्थात् युगान्त के विषय अतीतवादी दृष्टिकोण क्या है? :**

**उत्तर:** अतीतवाद के अनुसार, बाइबल की सारी भविष्यद्वाणी वास्तविक इतिहास है। पवित्र शास्त्र की अतीतवादी व्याख्या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को एक पहलीसदी के- संघर्षों के एक प्रतीकात्मक चित्र के रूप में मानती है, न कि उस विवरण के रूप में जो कि अन्त के समय में प्रगट होगा। शब्द अतीतवाद लैटिन शब्द प्राईटर से आता है, जिसका अर्थ या बीते "अतीत" हुए समय से है। इस कारण, अतीतवाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसके अनुसार से सम्बन्धित बाइबल "अन्त समय" आधारित भविष्यद्वाणीयाँ पहले ही पूरी हो चुकी हैं – अर्थात् अतीत में। अतीतवाद प्रत्यक्ष रूप से भविष्यवाद के विपरीत है, जो अन्त-के-समय की भविष्यद्वाणीयों को ऐसे देखता है जो कि अभीभविष्य में पूरी होनी बाकी हैं।-

अतीतवाद दो प्रकारों में विभाजित किया गया है अतीतवाद (या निरन्तर) पूर्ण : और आंशिक अतीतवाद। यह लेख पूर्ण अतीतवाद अत-या जैसे इसे कई बात उच्च) अतीतवाद( के विचारविमर्श तक ही सीमित रहेगा।-

अतीतवाद प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की भविष्य की भविष्यद्वाणी के गुणवत्ता को अस्वीकार कर देता है। अतीतवादी अन्दोलन अनिवार्य रूप से यह शिक्षा देता है कि नए नियम की सभी अन्त समय की भविष्यद्वाणीयाँ-70 ईस्वी सन् में पूरी हो गई थीं जब रोमियों ने यरूशलेम पर आक्रमण कर दिया था और इसे नाश कर दिया। अतीतवादी शिक्षा देते हैं कि प्रत्येक घटना सामान्य रूप से अन्त के समय के साथ सम्बन्धित है – मसीह का दूसरा आगमन, महाक्लेश, मृतकों का जी उठना, अन्तिम न्याय – सब कुछ पहले से घटित हो चुका है। अन्तिम न्याय के सम्बन्ध में, यह पूरे होने की प्रक्रिया में है। यीशु की पृथ्वी (पर वापसी एक "आत्मिकवापसी थी ", न कि शरीरिक वापसी।

अतीतवाद शिक्षा देता है कि व्यवस्था ईस्वी सन् 70 में पूरी हो गई थी और परमेश्वर की इस्माएल के साथ वाचा समाप्त हो गई थी। प्रकाशितवाक्य 21:1 में कहे गए नए आकाश और नई पृथ्वी," अतीतवादियों के लिए, नई वाचा के अधीन संसार के विवरण हैं। ठीक वैसे ही जैसे मसीहियों के ) "नई सृष्टि"2 कुरिन्थियों 5:17) बनाया गया है, ठीक उसी तरह से नई वाचा में संसार नई " के अधीन "पृथ्वी है। अतीतवाद का यह पहलू असानी से प्रतिस्थापन धर्मविज्ञान की ओर मार्गदर्शन कर सकता है।

अतीतवादी अपने तर्कों को समर्थन में यीशु के जैतून पहाड़ी पर दिए हुए उपदेश के संदर्भ की ओर संकेत करते हैं। यीशु के द्वारा अन्तिम समयों की कुछ घटनाओं के विवरणों को दे देने के बाद, वह कहता, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा" (मती 24:34)। अतीतवादी इसका ये अर्थ लगाते हैं कि वह सब जिसे यीशु ने मती 24 में कहा है एक ही पीढ़ी में उसके कहने के अनुसार घटित हो गया था – अर्थात् ईस्वी सन् 70 में यरूशलेम का नाश इस कारण था। "न्याय का दिन"

अतीतवाद के साथ कई समस्याएँ हैं। क्योंकि एक बात, परमेश्वर की इस्माएल के साथ वाचा सदैव की है (यिर्मयाह)31:33-36), और इस्माएल की भविष्य में पुनर्स्थापना किया जाएगा (यशायाह)11:12)। प्रेरित पौलुस ने उन लोगों के विरुद्ध चेतावनी दी है जो, हुमिनियुस और फिलेतुस की तरह, झूठी शिक्षा देते हैं कि, "पुनरुत्थान हो चुका है, और वे कितनों के विश्वास को उलट पुलट देते हैं" )2 तिमुथियुस 2:17-18)। और यीशु के द्वारा के उल्लेख को "इस पीढ़ी" उस पीढ़ी के अर्थ में लेना चाहिए जो कि मती 23 में वर्णित घटनाओं के आरम्भ को देखने के लिए जीवित है।

कलीसियाई धर्मविज्ञान एक जटिल विषय है, और बाइबल का प्रकाशनात्मक या रहस्योदाटन चित्र कई भविष्यद्वाणियों से सम्बन्धित होता है जिसने अन्तसमय की घटनाओं की विभिन्न तरह की व्याख्यायाओं की ओर नेतृत्व दिया है। के- मसीहत के मध्य में इन बातों के लिए कुछ मतभेद पाए जाते हैं। परन्तु फिर भी, पूर्ण अतीतवाद की कुछ गंभीर गलतियाँ हैं जिसमें यह मसीह के दूसरे आगमन की भौतिक वास्तविकता को इन्कार करता है और महाक्लेश के भयानक प्रकृति की घटना को यरुशलेम के नाश की घटना में सीमित करते हुए नीचा दिखाता है।

**प्रश्नमें मेरे विरुद्ध अपराध करने वाले को कैसे क्षमा कर सकता हूँ :**

**उत्तर:** हर किसी के साथ गलत किया गया है, उसे ठेस पहुँची है, और कुछ स्थान पर उसके विरुद्ध अपराध किया गया है। मसीही विश्वसियों को उस समय कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए जब उन्हें ठेस पहुँचती है? बाइबल के अनुसार, हमें क्षमा कर देना चाहिए। इफिसियों 4:32 घोषणा करता है कि, "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। इसी तरह से", कुलुस्सियों 3:13 घोषणा करता है कि, "और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए वैसे ही तुम भी करो। पवित्र शास्त्र के इन दोनों वचनों में मुख्य बात "यह है कि हमें ठीक वैसे ही दूसरों को क्षमा करना चाहिए जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है। हमें क्यों क्षमा करना चाहिए? क्योंकि हमें क्षमा कर दिया गया है! क्षमा सरल हो सकता है यदि इसे हमें केवल उन लोगों को ही प्रदान करना है जो इसके लिए पश्चाताप और दुख के साथ मांगने के लिए आते हैं। बाइबल हमें बताती है कि हमें बिना किसी शर्त के उन्हें क्षमा करना चाहिए, जो हमारे विरुद्ध अपराध करते हैं। किसी एक व्यक्ति को सच्चाई में क्षमा प्रदान करने से इन्कार करना नाराजगी, कड़वाहट और क्रोध को प्रदर्शित करता है, जो कि एक सच्चे मसीही विश्वासी के गुण नहीं हैं। प्रभु की प्रार्थना में, हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे पापों को क्षमा करे, ठीक वैसे ही जैसे हम हमारे विरुद्ध पाप करने वालों को क्षमा करते हैं (मत्ती) 6:12। यीशु ने मत्ती 6:14-15 में ऐसे कहा है कि, "इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा। परमेश्वर की क्षमा के ऊपर पवित्र शास्त्र में बोले गए अन्य वचनों के प्रकाश में, मत्ती 6:14-15 ऐसा कहने के लिए सर्वोत्तम रूप में समझा जाना चाहिए कि जो लोग अन्यों को क्षमा करने से इन्कार कर देते हैं उन्होंने सच्चाई में स्वयं के लिए परमेश्वर की क्षमा का अनुभव नहीं किया है।

जब भी हम परमेश्वर के आदेशों की अवज्ञा करते हैं हम उसके विरुद्ध पाप करते हैं। जब भी हम किसी एक व्यक्ति के साथ गलत करते हैं, हम न केवल उस व्यक्ति के विरुद्ध अपराध करते हैं, अपितु परमेश्वर के विरुद्ध भी। जब हम जिस सीमा में परमेश्वर हमारे सारे अपराधों को क्षमा करता है उस पर ध्यान लगाते हैं, तो हम पाते हैं कि हमारे पास इस अनुग्रह को अन्यों से वंचित करने का कोई अधिकार नहीं है। हमने परमेश्वर के विरुद्ध किसी भी व्यक्ति के द्वारा हमारे विरुद्ध में किए हुए अपराध की तुलना में असीमित रूप में पाप किए हैं। यदि परमेश्वर हमें इतना ज्यादा क्षमा कर सकता है, तो हम किस तरह से अन्यों के द्वारा किए हुए थोड़े से को क्षमा कर सकते हैं? यीशु के मत्ती 18:23-35 में दिए हुए दृष्टान्त में इस सत्य का एक सशक्त चित्रण है। परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि जब हम उसके पास क्षमा माँगने के लिए आते हैं, तो वह इसे मुफ्त में प्रदान करेगा (यूहन्ना 1:9)। जिस क्षमा को हमें प्रदान करना चाहिए उसकी कोई सीमा नहीं होनी चाहिए, ठीक उसी तरह से परमेश्वर की क्षमा असीमित है (लूका) 17:3-4।

**प्रश्नअन्य भाषाओं में बोलने का क्या अर्थ है :**

**उत्तर:** अन्य भाषाओं में बोलने की पहली घटना प्रेरितों के काम 2:1-4 में पिन्टेकुस्त के दिन घटित हुई। प्रेरित भीड़ के साथ सुसमाचार, उनसे उनकी भाषा में बातें करके बॉट रहे थे; "हम अपनीअपनी भाषा में उन से परमेश्वर के-बड़ेबड़े कामों की - प्रेरितों के काम" ! चर्चा सुनते हैं (2:11)। यहाँ पर भाषाओं के लिए जिस यूनानी शब्द का अनुवाद किया है उसका अर्थ

से "अन्यभाषा" है। इसलिये अन्यभाषा का वरदान एक व्यक्ति द्वारा एक ऐसी भाषा में बोल कर किसी दूसरे व्यक्ति की आत्मिक सेवा करना जो उसी भाषा को बोलता है। 1कुरिन्थियों 12-14 के अनुसार, पौलुस आत्मिक वरदानों की चर्चा करते हुए कहता है कि, "इसलिये हे भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बातें करूँ, और प्रकाश या ज्ञान या भविष्यद्वाणी या उपदेश की बातें तुम से न कहूँ, तो मुझे से तुम्हें क्या लाभ होगा?" (1कुरिन्थियों 14:6)। प्रेरित पौलुस के अनुसार, और प्रेरितों के काम में वर्णन की गई भाषा से सहमत होकर, अन्य भाषा में बोलना उस व्यक्ति के लिए मूल्यवान् है जो परमेश्वर का संदेश अपनी ही भाषा में सुनता है, परन्तु अन्य सभों के लिए यह तब तक महत्वहीन है जब तक कि इसका अनुवाद न किया जाए।

अन्यभाषा के वरदान को प्राप्त करने वाला व्यक्ति )1कुरिन्थियों 12:30) यह समझ सकता है कि अन्यभाषा को बोलने वाला व्यक्ति क्या कह रहा है यद्यपि वह नहीं जानता कि कौन सी भाषा बोली जा रही है। अन्यभाषा का अनुवाद करने वाला व्यक्ति फिर अन्यभाषा के सन्देश को प्रत्येक के लिए प्रेषित करता है, जिससे सभी समझ सकते हैं। इस कारण जो अन्य भाषा बोलें, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।) "1कुरिन्थियों 14:13)। पौलुस का अन्यभाषा के सम्बन्ध में निष्कर्ष जिनका अनुवाद नहीं किया जाता बहुत अधिक शक्तिशाली हैपरन्तु" : कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि दूसरों को सिखाने के लिए बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ" (1कुरिन्थियों 14:19)।

क्या अन्यभाषा में बोलने का वरदान आज भी अस्तित्व में है? 1कुरिन्थियों 13:8 अन्यभाषा के वरदान के समाप्त होने का उल्लेख करती है, यद्यपि यह 1कुरिन्थियों 13:10 में के आने के साथ इसे सम्बद्ध करती है। कुछ "सर्वसिद्ध" लोग वाक्य में यूनानी क्रियाओं की भिन्नता जो कि भविष्यद्वाणियों और ज्ञानके मिट " और अन्यभाषा की मध्य में कि यह "मिटने" के "सर्वसिद्ध" को "जाएंगी आगमन से पहले ही अन्यभाषा के रूकने के प्रमाण के रूप में संकेत देते हैं। जबकि यह सम्भव है, परन्तु यह पवित्रशास्त्र में स्पष्ट नहीं किया गया है। कुछ लोग यशायाह 28:11 और योएल 2:28-29 जैसे संदर्भों की ओर प्रमाण के रूप में संकेत देते हैं कि अन्यभाषा में बोलना परमेश्वर के आने वाले न्याय का एक चिन्ह था। 1कुरिन्थियों 14:22 अन्यभाषा को "अविश्वासियों के लिए चिन्ह" के रूप में वर्णन करता है। इस दलील के अनुसार, अन्यभाषा का वरदान यहूदियों के लिए एक चेतावनी था कि परमेश्वर इसाएल को दण्डित करने वाला है क्योंकि उसने यीशु मसीह को मसीह मानने से इन्कार कर दिया था। इसलिए 70 ईस्वी सन् में, रोमी लोगों के द्वारा यरूशलेम के विनाश के द्वारा परमेश्वर ने इसाएल को दण्डित किया और इसके बाद अन्यभाषा अब और अपने लक्षित उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं की जाती हैं। यद्यपि यह दृष्टिकोण सम्भव है, अन्यभाषाओं के प्राथमिक उद्देश्य की पूर्णता आवश्यक रूप से इसके रूकने की मांग नहीं करता है। पवित्रशास्त्र निष्कर्ष रूप से कभी भी इस बात पर जोर नहीं देता है कि अन्यभाषा में बोलने का वरदान मिट गया अर्थात् बन्द हो गया है। ठीक इसी समय, यदि अन्यभाषा में बोलने का वरदान आज के समय में कलीसिया में सक्रिय होता, तो यह पवित्रशास्त्र की सहमति के द्वारा पूरा किया जाता। वह एक वास्तविक और बुद्धिमानी वाली भाषा होगी )1कुरिन्थियों 14:10)। वह एक दूसरी भाषा बोलने वाले व्यक्ति के साथ परमेश्वर का वचन बाँटने के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए होगा प्रेरितों के काम) 2:6-12)। वह उस आज्ञा में सहमति के साथ होगी जो परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस के द्वारा दी थी, "यदि अन्य भाषा में बातें करनी हो, तो दो या बहुत हों तो तीन जन बारीबारी से बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करने वाला न हो, तो अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे) "1कुरिन्थियों 14:27-28)। वह 1कुरिन्थियों 14:33 के अनुसार भी होगी, "क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है, जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।" परमेश्वर निश्चित रूप से एक व्यक्ति को अन्य भाषा बोलने का वरदान दे सकता है जिससे कि वह दूसरी भाषा बोलने वाले व्यक्ति के साथ बातचीत करने के योग्य हो सके। पवित्र आत्मा आत्मिक वरदानों को बाँटने में सम्प्रभु है )1कुरिन्थियों 12:11)। कल्पना करें कि मिशनरी लोग कितना ज्यादा फलदाई हो जाएंगे यदि उन्हें भाषा सीखने के लिए स्कूल न जाना पड़े, और वे एकदम से लोगों से उनकी अपनी भाषा में बोलने में समर्थ हो जाएंगे। यद्यपि परमेश्वर ऐसा करता हुआ जान नहीं पड़ता। आज के समय में अन्यभाषाएँ उस रूप में नहीं प्रगट हो रही हैं जैसे कि नए नियम के समय

में थी, इस सत्य के बाद भी कि वह बहुत अधिक उपयोगी होती। विश्वासियों की एक विशाल संख्या अन्य भाषा को बोलने के वरदान के अभ्यास का दावा करती है परन्तु वे ऐसा पवित्रशास्त्र की सहमति के साथ नहीं करते जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। ये तथ्य एक निष्कर्ष की ओर ले जाते हैं कि अन्य भाषाओं का वरदान समाप्त अर्थात् मिट चुका है या फिर आज के समय में कलीसिया के प्रति परमेश्वर की योजना में बहुत ही निम्न स्तर पर है।

### आम्ही येशु ख्रिस्ताच्या द्वारे पुन्हा जीवनाच्या उद्देशाला बांधु शंकतो

जीवनाचा खरा अर्थ, दोन्ही जीवनामध्य आताच्या आणि सार्वकालीक जीवन, जे जीवन आदाम आणि हवा हे पापात पडल्यामुळे हरवले होतेदेवाचीसंगतीतुली होती ती . परत देवाने बांधली आज देवाच्या संगती जुडण्यासाठी आम्हाला त्यांच्या पुत्राच्या द्वारे येशु ख्रिस्ता द्वारे हे शक्य होणार आहेप्रेषीत).4:12,योहान 14:6,योहान1:12) सार्वकालीक जीवन तेव्हा मिळू शकते जो कोणी तोतो यापुढे पाप करीत राहत नाही तर)ती पापाच्या पश्चिमाप करीतो/ ख्रिस्ताबरोबर चालतो,व ख्रिस्त बदलतो आणि तो नविन मनुष्य बनवितोकारण ( त्यांनी येशु ख्रिस्ताला आपला तारणारा म्हणून पहा प्रश्न)“तारणासाठी कोणती योजना आहे?” हा सर्वात महत्वाचा प्रश्न आहे यांची माहिती आम्हाला व्हावीजीवनाचा खरा अर्थ प्राप्त करण्यासाठी येशु ख्रिस(.ळताला आपल्या जीवनात वैकीक तारणारा म्हणून स्विकार करूनच होते .(ही उत्तम वाटणारी गोष्ट आहे) मग त्यापेक्षा जीवनाचा खरा अर्थ प्राप्त होण्यासाठी जेव्हा आम्ही ख्रिस्ताच्या मागे शिष्य म्हणून चालतो,त्याच्या पासून शिकतो,त्यांच्या सगती वेळ घालवितोवचनाप्रमाणे. चालणारे, पवित्र शास्त्रा द्वारे संभाषण करीतो,प्रार्थनेद्वारे आणि त्याच्या अज्ञांचे पालन करून चालतो किंवा तुम्ही अविश्वास असणारे आहातकिंवा) नवीन विश्वअसणारेतुम्ही स्वताला हे( म्हणताना ऐकताल “हे काही रोमाचकारी किंवा आनंद देणारे वाटत नाही!” परंतु कृपा करून आपण थोडेसे पुढे वाचन करु येशु ने खालील वाक्य म्हटले “अहो कष्टी व भाराक्रांत जनहो तुम्ही सर्व मजकडे या, म्हणजे मी, तुम्हास विश्रांती देईनमी ,जो मनाचा सौम्य लिन आहे त्या माझे जू आपणावर घ्या व मजपासून शिका म्हणजे तुमच्या जीवासविश्राती मिळेल कारण माझे जू सोयीचे व माझे ओऱ्झे हलके आहेमत्य).11:28-33)“मी आलो आहे तो त्यांना जीवन प्रासी व्हावी व ती विपूल पणे व्हावी म्हणून आलो आहेयोहान).10:10 बजो कोणी आपला( जीव वाचवण्यास पाहिल,तो त्याला मुकेल आणि जो कोणी मजकरिता आपल्या जीवाला मुकेल त्याला तो मिळेल मत्य)16:24-25)“परमेश्वराच्या ठाई तुला आनंद होईल तो तुझे मनोरत पूर्ण करील स्नोत्र)37:4). या सर्व वचनात आम्हाला सांगण्यात आले आहे की,आम्हाला निवड करायची आहे वैकीक जीवन जगण्यासाठी आजून आपण कोठल्या मार्गदर्शनाच्या शोधात आहात त्याचा परिणाम रिकामे होणे होईल किंवा जर आपण देवाच्या इच्छेप्रमाणे त्यांच्या उद्देश अंतकरणा पासून पूर्ण करण्याचा निणर्य घेत असाल तर त्याचा परिणाम तुमचे जीवन जगण्यासाठी पूर्ण करता येईल तो आमच्या इच्छाना पूर्ण करले आणि संतोषीने व भरभराटीने भरून काढील कारण तो आमच्यावर प्रेम करतोत्याच्या जवळ आमच्यासाठी उत्तम योजना आहेतजरुरी नाही की ते सोपे). असेल परंतु निश्चीतच भरभराटीचे असणार आहे(. जर तुम्ही एखाद्या खेळाचे प्रंशांसक आहात आणि तुम्ही तो खेळ पाहण्यासाठी मैदानावर गेलात व बसण्यासाठी “पहिल्या ओळीतून पाहिण्याचा”तुम्ही निश्चित प्रयत्न करणार यासाठी तुम्ही त्या खुर्चीची जास्त किंमत दयाल किंवा तुम्ही कमी पैसे देऊन दुर वरची खुर्चीची किंमत देऊन त्यावर बसाल अशाच प्रकारे ख्रिस्ती जीवन आहे . देवाचे कार्य शेवटच्या रागेत बसुन पाहणे म्हणजे रविवारच्या भक्तीच्या वेळी शेवटच्या खुर्चीवर बसणे हे ख्रिस्ती व्यतीचे काम नाही कारण त्यांनी पहिल्या रागेची किंमत भरली नाहीपहिल्या रागेत बसणे. म्हणजे ख्रिस्ताला पूर्ण अंतकरणाने ग्रहण करणे ते ख्रिस्ताच्या शिष्याचे तोती /ती स्वताच्या इच्छेने नाही तर तो / देवाच्या उद्देशाना पाहतेदेवाच्या कार्याला पूर्ण पहिल्यादांच . पूर्ण अंतकरणाने पाहणे म्हणजे ख्रिस्ताच्या शिष्याना स्वताच्या इच्छा पूर्ण करण्यासाठी धावपळ करणाची इच्छा सोडून देणे त्यामुळे आपल्या जीवनात देवाच्या इच्छेचा मागोवा आपण करू शकतोख्रिस्ताची आणि ).त्यासाठी किंमत चुकविलेली आहे. त्यांची इच्छा पूर्ण समरणपणते आपल्या जीवनात समृद्धीचा भरभरीचा अनुभव करू शकत ( तो आणि स्वतासाठी आणि सोबत्यासाठी आणि आपल्या निमार्णकरत्याच्या पुढे पश्चिमाप करून समना करू शकतो त्यासाठी तुम्ही किंमत भरलेली आहे का? काय तुम्ही ते करण्याची इच्छा बाळगता?जर असे आहे तर तो व्यक्ती आपल्या जीवनाचा अर्थ आणि उद्देश पूर्ण करण्यासाठी भुक्तेला राहणार नाही